व्यास■ी Vol. XVI ISSN 2320-2025

व्यासश्रीः
VYĀSAŚRĪḤ

(A UGC Care listed Refereed Research Journal)
Jan-June 2020
Date of Publication : 01.07.2020

This Issue is dedicated to
Padmashree Abhiraj Rajendra Mishra

: Chief Editor :
Dr. Buddheswar Sarangi

: Editor :
Dr. Somanath Dash

: Associate Editors :
Dr. Prasanta Kumar Mahala
Dr. Saroj Kumar Padhi
Dr. Jagamohan Acharya
Dr. Bharatbhushan Rath
Dr. Priyabrata Mishra
Dr. Gyanaranjan Panda
Dr. Shiuli Basu

Publisher
Padmashree Ramaranjan Mukherjee Chair of
Maharshi Vyasadev National Research Institute
A Unit of Vyasayanam, Regd. No. 1635-IV-477/04
Vedavyas, Rourkela-4, Odisha
Contact No. : 7003415810, 7044016153
email : vyasasri12@gmail.com

Board of Advisors :

Prof. Harekrishna Satapathy
Prof. Parameswar Narayan Sastri
Prof. Radhaballava Tripathy
Prof. Abhiraj Rejendra Mishra
Prof. Subramanyah Sharma
Prof. Prafulla Kumar Mishra
Prof. Somesh Kumar Mishra
Prof. Harihar Hota
Prof. Srinivas Varkedy
Prof. Chandrakant Shukla
Prof. Arun Ranjan Mishra
Dr. Partha Sarathi Mukhopadhya
Dr. Acharya Devabrata

Hon'ble Referees :

Prof. Kishor Chandra Padhi,
Ex-Professor, S. J. S. V. Puri
Prof. Tapan Shankar Bhattacharya,
Professor in Sanskrit, Jadavpur University, Kolkata
Prof. Satyanarayana Acharya,
Professor in Sahitya, National Sanskrit University, Tirupati

Co-Ordinators :

Dr. Suresh Kr. Banerjee (Academic)
Dr. Umakanta Panda (Finance)
Sri Chandradhwoja Majhi (Finance)
Smt. Laxmipriya Pahadi (Publicity)
Dr. Koushik Malakar (Printing)

Brief Bio-data of
Padmashree Abhiraj Rajendra Mishra

Name :
Professor Abhiraj Rajendra Mishra

Father :
Late Pandit Durga Prasad Mishra

Mother :
Late Abhiraji Devi

Date of Birth :
02.01.1943

Birth Place :
Dronipur, Janapad-Jounpur

Present Address :
Rajashree 1st Floor, Flat No. 4, New Teacer's Colony, Samarhill, Himachal Pradesh

Qualification :
M. A., D.Phil. (Allahabad), Vidyasagar (Honorary D. Lit), D.Lit, Shimla

Service :
Sanskrit Department, Himachal Pradesh University, Shimla
As Lecturer - 10.12.1966 to 1983
As Reader **:** 1983 to 21.01.1991
As Professor **:** 22.01.1991 to 30.06.2003

Visiting Professor - From April 1987 to 1989. in Udayan University, Indonasia

PUBLISHED WORKS OF
PROF. RAJENDRA MISHRA
प्रो 'अभिराज' राजेन्द्र मि■ा की प्रका■ात कृतियों

संस्कृत		प्रका■ान-वर्ष	मूल्य
	म■ाकाव्यम्		
१.	जानकीजीवनम्	१९८८	३००.००
२.	वामनासतरणम्	१९९४	३००.००
३.	आर्यन्योवित■ातकम्	१९७५	१००.००
४.	नवाष्टकमालिका	१९७६	५०.००
५.	परामबा■ातकम्	१९८१	५०.००
६.	■ाताब्दीकाव्यम्	१९८७	५०.००
७.	अभिराजसप्त■ाती	१९८७	१००.००
८.	धर्मानन्दचरितम्	१९९२	२५.००
९.	पञ्चकुल्या	१९९३	१००.००
१०.	कर■ूलनाथमा■ात्म्यम्	१९९६	३००.००
११.	कस्मै देवाय ■विषा विधेम	१९९६	३००.००
१२.	अरण्यानी	१९९९	१००.००
१३.	संस्कृत■ातकम्	१९९९	१००.००
१४	अभिराजस■स्रकम्	२०००	२००.००
१५.	मृगाङ्क, दूतम्	२००३	१००.००
१६.	चर्चरी	२००४	१५०.००
१७.	मृगमृगेन्द्रान्योवित■ातकम्	२००८	१००.००
१८.	अभिराजगीता	२०११	३००.००
१९.	अभिराजदण्डकम्	२०१४	–
२०.	■ातकपञ्चद■ाी	२०१४	–
२१.	तुलसीप्र■ास्ति■ातकम्	२०१४	–

	नवगीत-संग्र■ः		
२२.	वाग्वधूटी	१९७८	१००.००
२३.	मृद्धीका	१९८५	१००.००
२४.	■ुतिम्भरा	१९८९	१००.००
२५.	मधुपर्णी	२०००	२००.००
२६.	कौमारम्	२००६	१८०.००
२७.	धोरणी		–
	गलज्जलिका-संकलना		
२८.	मत्तवारणी	२००१	२००.००
२९.	■ालभञ्जिका	२००६	२५०.००
३०.	■विर्धानी	२००९	३००.००
३१.	कनीनिका	२०१०	३००.००
३२.	ि■ाखरिणी	२०१३	१३४.००
३३.	औदुम्बरी	२०१४	३००.००
	नाट्य-सा■ित्यम्		
एकांकी रूपक			
३४.	नाट्यपञ्चगव्यम	१९७१	१००.००
३५.	अकिञ्चनकाञ्चनम्	१९७४	५०.००
३६.	नाट्यपञ्चामृतम्	१९७७	१००.००
३७.	चतुष्पथीयम्	१९८३	१५०.००
३८.	रूपरुद्रीयम्	१९८६	१००.००
३९.	नाट्यसप्तपदम्	१९९६	३००.००
४०.	नाट्यनवरत्नम्	२००६	२००.००
४१.	नाट्यनवग्र■म्	२००६	१५०.००
४२.	नाट्यनवार्णवम्	२०१०	३००.००
४३.	ममोतमलघुरूपकाणि	२०१३	८०.००
४४.	नाट्यनवा■िनकम्		
४५.	रूपविं■ातिका		

नाटिका-नाटकम्

४६.	प्रमद्वरा	१९८८	३००.००
४७.	विद्योत्तमा	१९९२	३००.००
४८.	प्र■ान्तराधवम्	२००८	३००.००
४९.	लीलाभोजराजम्	२०११	३००.००
५०.	उभयोदयम्		

कथा-संकलनम्

५१.	इक्षुगन्धा	१९८६	२००.००
५२.	राङ्गडा	१९९२	१००.००
५३.	चित्रपर्णी	२०००	२००.००
५४.	पुनर्नवा	२००६	३००.००
५५.	अभिनवपञ्चतन्त्रम्	२००९	३००.००
५६.	कान्तारकथा	२००९	३००.००
५७.	छिन्नमस्ता	२०१०	३००.००
५८.	ममोत्तमकथानिकाः	२०१३	९५.००
५९.	सञ्चरणामृतमख		

संस्कृतकाव्य■ास्त्रम्

६०.	अभिराजय■ोभूषणम्	२००६	५००.००
६१.	संस्कृत सा■ित्य में अन्योक्ति	१९८५	१००.००
६२.	संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्य■ास्त्र		
	लाईब्रेरी संस्करण	२०१०	४००.००
	विद्यार्थी संस्करण	२०१०	२५०.००
६३.	■ोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपिविज्ञान	२००८	३००.००

समीक्षा-सा■ित्यम्

संस्कृत

६४.	■ास्त्रालोचनम्	१९९४	१००.००
६५.	समीक्षासौरभम्	२००३	३००.००
६६.	बालीद्वीपे भारतीया संस्कृतिः	२००९	३५०.००
६७.	ज्ञानाञ्जन■ालाका		

व्यास■ी Vol. XVI ISSN 2320-2025

समीक्षा-सा■ित्यम्

■िन्दी

६८.	मणिकाञ्चन	१९९१	८०.००
६९.	सुवर्णद्वीपीय रामकथा	१९९६	१००.००
७०.	भारतीय संस्कृति का जीवन्त प्रतीक : बाली द्वीप	१९९८	२००.००
७१.	सप्तधारा (५७ ■ोधलेख)	२००४	८००.००
७२.	स्वाध्यायपर्व	२०१२	६५०.००
७३.	प्रज्ञालोक	२०१२	४५०.००
७४.	सन्धानसिन्धु	२०१४	–
७५.	नई स■स्राब्दी में संस्कृत	२०१४	–
७६.	संस्कृत कविता का प्राचीन एवं नवीन परिदृ■य		
७७.	जनवादौ संस्कृत कविता	२०१४	–
७८.	संस्कृत कविता का समृद्धियुग		
७९.	सेजरा■ कसु■ास्त्रान् संसकिर्त	१९८८	१००.००
८०.	पोइटी ऐण्ड पोएटिवस		
८१.			

पाठ्यग्रन्थाः

८२.	किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्गः)	१९९२	३०.००
८३.	कादम्बरीकथामुखम्	१९७३	५०.००
८४.	छन्दोऽलङ्कारसौरभम्	१९८०	३०.००
८५.	रसनिरूपणम्	१९८६	०७.००
८६.	संस्कृतगद्यामृतम्	१९९६	४०.००
८७.	सा■ित्यदर्पणः (३ परि)	२०००	१००.००
८८.	संस्कृतकाव्यत्रिपथगा	२०००	१५.००
८९.	संस्कृतामृतचन्द्रिका	२०००	१५.००

 ISSN 2320-2025

अनुवाद एवं लिप्यन्तरणम्

९०.	रामायणककविन्	१९९५	३००.००
९१.	प्रो. राघवन्-प्रणीत रसों की संख्या	२००७	२००.००
९२.	सुवर्णमुक्तासंवादः (संस्कृत)	२०१०	२०१.००
९३.	विजयपर्व	२०११	३५.००
९४.	ओङ्कारविज्ञानम् (■िन्दी से संस्कृत)	२०१४	-

सम्पादितग्रन्थाः

९५.	देववाणीसुवासः (दो भाग)	१९९३	५००.००
९६.	प्रतानिनी (काव्य संग्र■)	१९९६	३००.००
९७.	वि■ां■ताब्दी संस्कृतकाव्यामृतम् (१३० कवि)	२०००	७५०.००
९८.	■िं■ताम्दी-संस्कृतग्रन्थसूचीत्रम्	२००२	२००.००
९९.	संस्कृत वाङ्मय में ■िमाचल	२०१२	५००.००
१००.	कल्पवल्ली (संस्कृत काव्यसंग्र■)	२०१३	३००.००
१०१.	ब्रह्मविद्यारसायनम्		

अभिराजराजेन्द्र-समीक्षासा■ित्य

१०२.	अभिराज राजेन्द्र : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व सम्पादन : डॉ. राजे■कुमारी मि■ा	२००५	५००.००
१०३.	सा■ित्यकल्पतरु : अभिराज राजेन्द्र लेखन - डॉ. राजे■कुमारी मि■ा	२०१०	५००.००
१०४.	अभिराज राजेन्द्र एवं उनकी कृतियौ डॉ. एस. रंगनाथ, बंगौर (कर्नाटक)		
	(प्रथम खण्ड)	२००९	
	(द्वितीय खण्ड)	२००९	२०००.००
	(तृतीय खण्ड)	२००९	३००.००
१०५.	अभिराज रागकाव्य - समीक्षा	२०१२	३००.००
१०६.	जानकीजीवन : एक अभिनव स्प■ा	२००८	४००.००

 ISSN 2320-2025

१०७.	आधुनिक संस्कृत गद्यकार (प्रथम पुष्प) अभिराज राजेन्द्र मि■ा लेखक : डॉ. मुके■ा पण्ड्या	२००८	९५.००
१०८.	इक्षुगन्धा का बंगला अनुवाद लेखक : ■ीमती अमिता चक्रवर्ती	२००८	६०.००
१०९.	डॉ. राधा एम. पटेल, पालनपुर गुजरात (गुजराती रूपान्तर)	२००९	५०.००

अप्रका■ित संस्कृत-कृतियाँ

१. पृथुवं■ाम् (म■ाकाव्यम्)
२. मङ्लाचरणकाव्यम्
३. गीतभारतम् (रागकाव्यम्)
४. अभिराजचम्पूः
५. औदीच्ययक्षगानम्
६. छन्दोऽभिराजीयम्
७. बालीविलासम् (खण्डकाव्यम्)
८. वैतरणी (काव्यसंकलना)
९. छायातपीयम् (काव्य)
१०. काव्यपञ्चवटी (■ातकसंग्र■ः)
११. काव्यतरङ्गिणी (विं■ातितरङ्गात्मिका)
१२. अभिराज■ातकम् (खण्डकाव्यम्)
१३. चौर■ातकम् (प्रणयकाव्यम्)
१४. गृभ्णामि त्वां सौभगत्वाय (आत्मवृत्तम्)
१५. मरुवणमाकन्दः (उपन्यासः)
१६. सा■ित्यपाथोनिधिमन्थनामृतम् / अर्वाचीनकविसदुक्तिसंककलनम्

व्यास■ी Vol. XVI ISSN 2320-2025

अभिराजराजेन्द्रवाङ्मयम्
ि■न्दी एवं अंग्रेजी

काव्यसंग्र■ :

१.	दो पात नींबू–तीन पात अमोला (६८ कविताएँ)	१९६८ ई
२.	मुक्तधारा (२० गीत)	१९७२ ई
३.	सपनों में डूब गया मन (५५ गीत)	१९७२ ई
४.	पलकों के बन्द द्वार (५३ गीत)	१९९० ई
५.	तटस्था (जनवादी कविताएँ)	२००३ ई

खण्डकाव्य :

६.	वेदना (भूमिका : पं. सुमित्रानन्दन पन्त)	१९६६ ई
७.	पनघट (भूमिका : डॉ. रामकुमार वर्मा)	१९६७ ई
८.	मुक्तिदूत (■ाईस्कूल के पाठ्यक्रम में निर्धारित)	१९७५ ई
९.	पूर्णकाम (भरत पर आि■त)	१९७५ ई
१०.	गृ■त्याग (तथागत पर आि■त)	१९७५ ई

बालसाि■त्य :

११.	बच्चो के पाहुन (पञ्चतन्त्र की पद्यकथाएँ)	१९७५ ई
१२.	पढो और बनो (सचित्र बालकथाएँ)	१९७५ ई
१३.	वन के गीत–मन के मीत (पद्यकथाएँ)	१९७५ ई

प्रास्ताविकम्

भगवद्गीता संसारसारतत्त्वान्विता सती व्यासाकालाद्यावधि संसारानलदग्धानां तद्विमुखानां परमतत्त्ववेत्तृणाञ्च ज्ञानकरं किरन्ती जनोपकारमग्नैवेति निश्चप्रचं वचः। तत्रापि नित्यानन्दसरिति भगवति परमपुरुषे श्रद्धानाः सन्तः अमृतनिष्यन्दिन्याः भक्तिधारायास्तटे विश्ववैचित्र्यं दर्शं दर्शं तत्कत्रपचितिमग्नाः संलक्ष्यन्ते। यं च तत्परमपुरुषस्य अनुवर्त्तारस्ते परंब्रह्मणि लीना न संसारतापतप्ता अपितु जन्ममरणवन्धनमुक्ता एव इति योगेश्वरकृष्णवैखरीं वयं पश्यामो यथा –

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः।। गीता १२/२०

स्वप्रियाप्रियनिरुपणप्रसङ्गे भगवनमुखनिसृंतामियं वाक् तत्त्वमिदं प्रतिपित्सति यत धर्ममयममृतं ये श्रद्धया सेवन्ते अन्वयन्ति वा त एव भगवत्प्रियाः। कोऽयं धर्म इति जिज्ञासायां दशलक्षणत्मिकां मनुवाचं चोदनालक्षणात्मिकां भाट्टादिवाचं, वेदविहितेष्टसाधनाताका यागादिरेव धर्म इति शस्त्रीयां वाणीं च पश्यामः। वस्तुतः प्रियाप्रियविवेकविमुखः सन स्वकर्त्तव्यपालनमेव धर्म इति अष्टादशाध्यायात्मिका गीता वाणी सार्वकालिकं लक्षणं प्रस्तौति। स्वपरिवारजनानां भविष्यन्मरणं स्मारं स्मारं दुःखाभिभूतस्य मध्यमपाण्डवश्य विस्तृष्टचापस्य अर्जुनस्य विचलितमनसं क्षत्रियोचितकर्मणि संयोजनाय भगवतः अष्टादशयोगकृतः यः प्रयासः स एव धर्मः। अन्तिमे बाधितशिष्योऽयं अर्जुनः जगत्प्रपञ्चजालं तत्तकर्त्तारं च विदित्वा गलदश्रुः कृष्णशरणमाप्नोति, क्षत्रियधर्मरक्षणाय पापाचारिणां विनाशं विधाय धर्मस्थापनं करोति। अतः धर्म नाम कर्त्तव्यपालनम्। स्वकर्त्तव्यपालनपरोऽपराहितचिन्तामुक्तः नरः अक्षयं सुखमश्नुते। यथोक्तं –

न हि कल्याणकृत् कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति। गीता –

प्रसङ्गस्यास्योपस्थापनस्य रहस्यं किमिति चेदुच्यते–

सम्पूर्णं विश्वं यदा करोणातापत्रस्तं निश्चलमभवत् तदापि व्यासश्रीपरिवारजनाः स्वकर्त्तव्यपालनात् विमुखाः नासन्। ज्ञानवितरणाय

शास्त्रपरम्परापोषणाय च कृतनिश्चयाः वयं व्यासश्रीप्रकाशनाय अहर्निशं जागरुकाः आस्म। अतः अद्य भवतां पुरस्तादिदं ज्ञानामृतं प्रस्तोतुं वयं क्षमाः।

अस्य कलेवरस्य सज्जीकरणे दत्तमानसः अस्माकं परिवारस्य वरिष्ठः सदस्यः डा सोमनाथो दाशः काव्यशास्त्राभ्यासकुशलः किञ्च अर्वाचीनटङ्कणशास्त्रप्रवीणः महान्तमुपकारं कृतवान्। सर्वाणि पत्राणि एकीकृत्य प्रकाशनयोग्यं चकार। अतः तस्योपरि स्वतन्त्रतया समादनदायित्वं प्रदत्तमस्माभिः।

गुरुपूजनपरम्परायाः संरक्षणाय विद्वत्सेवनकला अस्माभिः स्वीकृता। अस्मिन पर्याये शताधिककाव्यशास्त्ररचननिपुणानां पद्मश्रीरिति विशिष्टसम्मानभाजां अभिराजराजेन्द्र मिश्रसर्याणां कण्ठाश्रितायाः भगवत्याः शारदाम्बायाश्चरणकमले शव्दपुष्पमालेयं समर्पिताऽस्ति। मान्यानां राजेन्द्रमिश्रवर्याणां कीर्तिलक्ष्मीः सर्वदा तदनुयायिनां मोदवर्षिणी भवेदिति धिया प्रयासोऽयं कल्पितः।

अत्र ये श्रेष्ठाः निबन्धनकुशलाः पत्राणि प्रस्तुवन्ति त एव स्वस्वशास्त्रमार्गे विहितरतयः सुन्द'तया स्वभारतीमुपस्थापयन्ति। विशेषतः श्री डा कामेश्वर–प्रियव्रत–दयानाथ–नृसिहं–दयानन्द–पूर्णचन्द्र–रत्नमोहन–प्रदीप–ज्ञानरञ्जन–सोमनाथ–सपनप्रमुखानां शास्त्रवैखर्याः तलस्पर्शिता बहुजनसुखायस्यादिति अस्माकं द्रढीयान् विश्वासः। सर्वेभ्यः परिवारसदस्येभ्यः शुभेच्छा। करोणातापकाले सर्वे निरामयाः सन्तः व्यासश्रीशतज्ञानदीपव्याख्यानमालायाः आनन्दं स्वीकुर्वन्तु। अन्तिमे मङ्गलवाक्यमिदमस्तु–

करोणाकरुणोत्पातो रंहसा नश्यतु सखे।
करुणावरुणावासे वसामो विश्वपुत्रकाः।।

प्रकाशनतिथिः
३०–०६–२०२०

विद्वच्चरणसेवकाः
बुद्धेश्वरषडङ्गी
मुख्यसम्पादकः
तथा व्यासश्रीपरिवारस्य सदस्याः।

विषयसूची

सृष्टिः	स्रष्टा	पृष्ठम्
ि■ा■ुपालवधीयप्रयोगवैचित्र्यम्	डॉ. कामे■वरचौधरी	1
अधिकारस्वरूपमीमांसा	डॉ. प्रियव्रतमि■ाः	5
माघकाव्ये प्रतिबिम्बितं लोकजीवनम्	डा. रत्नमो■नझाः	10
■ाीसत्सङ्गिजीवनग्रन्थानुसारेण स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं ि■ाक्षा सुरक्षा च	साधुः लक्ष्मणप्रका■ादासः	21
वेदे प्राणिविज्ञानम्	डा. ■वेतपद्मा ■ातपथी	26
उपनिषत्सु सृष्टितत्त्वविम■ाः	डॉ. सपनकुमारपण्डा	32
सप्रयोजनं काव्यस्वरूपनिरूपणम्	डॉ. पूर्णचन्द्र उपाध्यायः	44
खण्डकाव्यम्	डॉ. सोमनाथदा■ाः	53
वेदान्तदृष्ट्या ज्ञानम्	डॉ. नन्दिघोषम■ापात्रः	65
संस्कृतवाङ्मये पञ्च म■ाभूतानि	कि■ानलाल जो■ाी	72
ब्रह्मपुराणोक्तजम्बुद्वीपे भुवनकोषः	डा. पारमिता पण्डा	81
वै■ोषिकमतमाि■ात्य सर्वमुक्तिविम■ाः	डॉ. विप्लवचक्रवर्ती	86
विविधकाव्येषु किरातः – एकमालोचनम्	डॉ. प्रदीपकुमारबागः	90
कालिदाससाि■त्ये चिकित्साविज्ञानम्	डॉ. नृसिं■नाथगुरुः	94
कतिपयपा■चात्यच्छन्दसां परिचयः संस्कृतवाङ्मये तेषां प्रयोग■च	डॉ. भास्करच्याटार्ज्जी	102
■ाब्दार्थविकारे काि■ाकोदा■रणानां प्रासङ्गिकता	डॉ. धर्मेन्द्रदासः	113
■ाौतयज्ञेषु विष्णुस्वरूपविम■ाः	डॉ. दे. दयानाथः	124

सृष्टिः	स्रष्टा	पृष्ठम्
म■ाभारते ■ान्तिनीतिः	डॉ. लक्ष्मीकान्त षडङ्गी	131
न्यायकुसुमाञ्जलौ परमाणुनिरवयवत्ववादः	ड. प्रलयो व्यानार्जी	137
काव्य ■ाास्त्रे अलङ्कार प्रयोगः	■ान्तनुः प्रधानः	144
ओडि■ाराज्यस्य ि■ाल्पकलायां खण्डगिरेः उदयगिरे■च वैि■ाष्ट्यम्	डा. भारतभूषणरथः	143
समासभेदविम■ाः	डॉ. गिरिधारी पण्डा	158
■ाीमद्भागवतमते पादसेवनेन जीवमुक्तेः अवधारणा	तरणीकुमारपण्डा	161
जुमरकौमुदीकारयोः तौलनम्	अरविन्दनायकः	184
आचार्यवाचस्पतिप्रका■ात्मनोर्भामती विवरणप्रस्थानयोस्समीक्षणम्	डा. दयानन्दपाणिग्रा■ी	190
उपनिषत्सु सृष्टिवैि■ाष्ट्यम्	डॉ. पि.टि.जि. रङ्गरामानुजाचार्यः	201
Tales and Society: In the context of Sanskrit Literature	Dr. Satyaprasad Mishra	204
Gita and Personality Development	Dr. Jagamohan Acharya	214
साम्प्रतिक युगे गीतगोविन्द ...	Dr. Gyanaranjan Panda	220
वाल्मीकि रामायण मे वर्णित	Dr. Dev Prakash Gujela	229
ग्रन्थसमीक्षा		237
Mundakopanisad and Swaminarayan Bhasyam	Dr. Buddheswar Sarangi	
Writers' World		240
Vyasashri Registration Form		242